पाठक मंच

आह्वान को नियमित करें

मैं पिछले एक वर्ष से 'आह्वान' पढ़ रहा हूँ। मुझे यह एक बेहद ज़रूरी और विचारोत्तेजक पत्रिका लगती है। पिछले अंक में आइंस्टीन पर आया लेख बेहद जानकारी देने वाला था। साथ ही जोन रोयलोव्स की किताब की समीक्षा से भी कई नई जानकारियाँ मिलीं। होसे मारिया सिसोन की कविताएँ संवेदनाओं को झकझोरने वाली थीं। लेकिन मेरा सुझाव है कि इसे नियमित करने का प्रयास करें। क्योंकि विचारों के सम्प्रेषण में एक निरन्तरता का होना ज़रूरी है।

योगेश, गोविन्दपुरी, दिल्ली

संयोग से 'आह्वान' मिली

मैं लखनऊ से दिल्ली आ रहा था। अलीगढ़ के पास कुछ नौजवान ट्रेन में चढ़े जो भगतसिंह के विचारों पर भाषण दे रहे थे और नारे लगा रहे थे। मैंने उनके पर्चे लिए और साथ ही उन्होंने मुझे यह पत्रिका 'आह्वान' दी। दिल्ली आते-आते मैं पत्रिका को पूरा पढ़ गया। मेरे विचार में आज इन विचारों की बेहद ज़रूरत है। आज जब देश का युवा वर्ग निराशा की गर्त में पड़ा है या कुसंस्कृति की अफीम के नशे में चूर है, ऐसी पत्रिका और ऐसे प्रयास ही उन्हें सही रास्ते पर ला सकते हैं।

मैंने दिल्ली पहुँचते ही आह्वान की सदस्यता ली। मुझे आइंस्टीन पर आया लेख बेहद रोचक और उद्विग्न करने वाला लगा। ऐसे लेखों को नियमित तौर पर दें। साथ ही संसदीय बातबहादुरों यानी नकली वामपंथियों पर आई टिप्पणी भी काफी चुटीली थी। उम्मीद करता हूँ कि आह्वान अपनी इस नैसर्गिकता और तीखे तेवर को बरकरार रखेगा।

अनिल राजपूत, दिल्ली

साहित्यिक सामग्री बढ़ाएँ

मैं आह्वान का नियमित पाठक हूँ। पिछले कुछ समय में मुझे यह रुझान लगा है कि साहित्यिक सामग्री कुछ कम हुई है, खासकर कहानियाँ। पत्रिका की वैचारिक अन्तर्वस्तु तो काफी समृद्ध है। इसे पढ़ना हमेशा एक ताज़ा कर देने वाला अनुभव होता है। मैं थोड़ा साहित्यिक रुचि वाला व्यक्ति हूँ। लिहाज़ा, आप मेरी इस माँग को, या कहें ज़रूरत को समझ सकते हैं।

उम्मीद है आप मेरे सुझाव पर विचार करेंगे। अगले अंक के इन्तज़ार में....

मनोज रघुवंशी, हापुड़

"अगर हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ और बजाय हमारे गोरे आकाओं के हमारे वतनी भाई सल्तनत व हुकूमत की बागडोर अपने हाथों में ले लें और तक़रीकोतमीज़ (बँटवारा)–अमीर व ग़रीब, ज़मींदार व काश्तकार में रहे तो ऐ ख़ुदा, मुझे ऐसी आज़ादी उस वक़्त तक न देना जब तक तेरी मख़लूक में मसावात (बराबरी) क़ायम न हो जाए।"

–अशफाक उल्ला

आह्वान खून में उबाल ला देता है

'आह्वान' पढ़ी। सम्पादकीय बेहद विचारोत्तेजक था और भगतसिंह को याद करने के सही तरीके को काफी अच्छी तरह समझाया गया है। आइंस्टीन पर आए लेख से काफी ऐसी जानकारियाँ मिलीं जिन्हें मैं नहीं जानती थी।

स्मृति-संकल्प यात्रा का फोल्डर पढ़ा। इसके बारे में मैं और जानना चाहती हूँ और इससे जुड़ना भी चाहती हूँ। इसके बारे में और जानकारियाँ देने का कष्ट करें।

नेहा, दिल्ली

"शिक्षा की कोई भी प्रणाली इस प्रकार की होनी चाहिए कि वह किसी राष्ट्र की मानसिक-आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। भारत में हम लोग अपनी शिक्षा प्रणाली के दोषों से पूर्णतया परिचित हैं। यह शिक्षा प्रणाली हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करती, वरन् यह एक बड़ा भारी नुकसान कर रही है। हमारे शिक्षितों को यह व्यक्तिगत और सामाजिक उत्तरदायित्व के भार को वहन करने में सर्वथा असमर्थ कर देती है।"

-राहुल सांकृत्यायन
('दिमागी गुलामी' से)

नया वर्ष
युवा दिलों के नाम
ज़िन्दा कौमों के नाम,
साहसिक यात्राओं के नाम,
सक्रिय ज्ञान के नाम,
न्याय-युद्ध में भागीदारी की
तत्परता के नाम,
सच्चे प्यार के नाम,
मानवता के भविष्य में
उत्कट आस्था के नाम!